॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रभु! मेरे में वह महानता और सत्ता दो, कि मैं इस यज्ञ वेदी को, यहाँ भी अपनाता जाऊँ और सूर्य लोक में जाऊँ तो वहाँ भी इसी प्रकार की वेदी उत्पन्न कर, संसार को ऊँचा बनाता चला जाऊँ। हे देव! आप कल्याण करने वाले हैं। मुझे वह सत्ता दो। यदि मुझे आज्ञा मिले तो मैं ध्रुव मण्डल तक जाऊँ तो वहाँ भी यज्ञ वेदी का प्रसार करूँ। हे प्रभु मेरा जीवन यज्ञमय हो।

हे प्रभु! हमें वह बल दो, वह सत्ता दो, जिससे विधाता! हम संसार रूपी महान् वेदी की रक्षा कर सकें, जिस वेदी पर नाना प्रकार के खरदूषण जैसे दैत्य आ जाते हैं। हे देव! यहाँ ताड़का जैसे राक्षस यज्ञ वेदी को भ्रष्ट करने आ रहे हैं। हे विधाता! मैं चाहता हूँ वह ताड़का, आज मेरे द्वारा न आए, वह खरदूषण मेरे द्वारा न आएँ। आज विश्वामित्र और राम जैसे आ करके हमारी रक्षा करें। आज हमें इस भगवान् राम वाले सदाचार को अपनाना है जिससे यज्ञ वेदी की रक्षा होती है। दैत्यों को शान्त किया जाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 566 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 641
वर्ष : 48 44 समग्र वर्ष : 54

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. याग के स्वरूप	पूज्यपाद-गुरुदेव एवं महर्षि महानन्द जी महाराज	5-20
4. प्रकाश का कुञ्ज	पूज्यपाद-गुरुदेव	21-38
5. ऋषियों के उद्‌गार		39
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		40-42

ऋग्वेद ब्रह्म पारायण याग

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यपाद-गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की सद्‌प्रेरणा एवम् आशीर्वाद से वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी ऋग्वेद ब्रह्म पारायण याग का आयोजन आर्य समाज मालवीय नगर नई दिल्ली के प्रांगण में दिनाँक 13 दिसम्बर 2019 से 15 दिसम्बर 2019 तक बड़े हर्ष एवम् उल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप सभी अपने सम्बन्धियों, मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.)

आप सभी को कार्तिक पूर्णिमा गङ्गा स्नान की हार्दिक शुभकामनाएँ।

॥ ओ३म् ॥

याग के स्वरूप

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और वे यज्ञोमयी स्वरूप माने गए हैं। क्योंकि याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है और वह उसी में वास कर रहा है। इसीलिए हम परमपिता परमात्मा का जो ये यज्ञोमयी स्वरूप अथवा ब्रह्माण्ड है, ये जगत है, मानो ये सब उस परमपिता परमात्मा की प्रतिभा कहलाती है।

ऋषि-मुनियों की प्रतिभा

आओ मेरे पुत्रों! हम उस परमपिता परमात्मा के यज्ञोमयी स्वरूप का वर्णन तो हम प्रायः हमारे विचारों में, हमारी मानवता में और सर्वत्र ब्रह्माण्ड के एक-एक कण-कण में व्याप्त हो रहा है। तो हम उस परमपिता परमात्मा जो व्यापयम् ब्रहे जिसका इतना ऊर्ध्वा में क्रियाकलाप है। जितना इसका ऊर्ध्वा में महावृत्तियाँ कहलाती हैं। तो बेटा! उसका आनन्दमयी जो यज्ञोमयी स्वरूप जगत है, इसके ऊपर प्रत्येक मानव को बेटा! अन्वेषण करना चाहिए, अनुसन्धान करना चाहिए जिससे हम, परमपिता परमात्मा का जो रचनामयी जगत है, रचनामयी यज्ञशाला है, इसको हम अच्छी प्रकार जान जाए। क्योंकि हमारे ऋषि-मुनियों ने याग के ऊपर बेटा! अपने-अपने बड़े मन्तव्य दिए

हैं अथवा उनका बड़ा गम्भीर अध्ययन रहा है। और आध्यात्मिक और भौतिकवाद, दोनों प्रकार के यागों को जानने के लिए वो सदैव तत्पर रहे हैं। क्योंकि हमारे यहाँ बेटा! दो प्रकार का विज्ञान, दो प्रकार का क्रियाकलाप परम्परागतों से बेटा! मानवीय मस्तिष्कों में निहित रहा है और ऋषि-मुनियों की प्रतिभा में वो सदैव अभ्युदय होता रहा है। जिससे बेटा! उन्होंने इस सम्बन्ध में बहुत कुछ मनन और चिन्तन किया है। और उस चिन्तन में ही वाक्य आज हमारे स्मरण आ रहे हैं। क्योंकि मुझे भी कहीं से ये प्रेरणा हमें प्राप्त हो रही है क्या याग के ऊपर कुछ विचार-विनिमय किया जाए। और याग के ऊपर कुछ विचार देना ही मानव का कर्त्तव्य है, क्योंकि ये जो संसार हमें दृष्टिपात आ रहा है ये परमपिता परमात्मा की यज्ञशाला के रूप में प्रायः हमें दृष्टिपात आता रहता है। क्योंकि जो भी मानव अपने क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहा, वो याग में परणित हो रहा है और याग कर रहा है। तो आओ मुनिवरों! देखो, मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना नहीं दूँगा।

भिन्न-भिन्न प्रकार के याग

आओ, मैं **याग के सम्बन्ध में बेटा! देखो ऋषि-मुनियों का अपना-अपना मन्तव्य देना प्रारम्भ करूँगा**, क्योंकि हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के याग माने गए हैं। जैसे हमारे यहाँ विष्णु याग है, क्योंकि वह पालन करने में आता है। हमारे यहाँ जैसे वाजपेयी याग है, वह पुरुषार्थ का प्रतीक कहलाता है। जैसे हमारे यहाँ अजामेध याग है, हम अपनी इन्द्रियों को विजय करते हुए, इस संसार की जानकारी करें। जैसे अश्वमेध याग है। मेरे प्यारे! राजा और प्रजा दोनों प्रसन्न रह करके जब देखो अपने राष्ट्र के कल्याण के लिए याग करते हैं अथवा अश्वमेध, क्योंकि अश्व नाम राजा का है और मेध नाम प्रजा का है, जब दोनों एक-दूसरे से सन्तुष्ट रहते हैं और वह समय-समय पर बेटा! देखो याग में परणित हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, वास्तव में वृष्टि याग है,

जहाँ मनोनीत भावनाएँ बेटा! देखो मानव की अन्तरिक्ष में और द्यौ में प्रवेश होती हैं। बेटा! वो याग में परणित होता है तो वह मुनिवरों! देखो, वह अश्वम् ब्रहे वह वृष्टि याग कर रहा है। एक बेटा! कन्या याग होता है। मुनिवरों! देखो, कन्या देव लोक में, पितर लोक में, अभयो पति लोक को प्राप्त हो करके बेटा! याग करने का उसे भी अधिकार प्राप्त होता है। विचार आता रहता है मेरे प्यारे! मैं याग के नामोकरण का उद्गीत तो गाना नहीं चाहता हूँ क्योंकि विचार तो कुछ और ही कह रहा है। केवल मन्तव्य हमारे विचारों का यह कि भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन हमारे वैदिक साहित्य में आता रहता है। जैसे अग्निष्टोम याग है। मेरे पुत्रों! देखो, जैसे ब्रह्म याग है, रुद्र याग है, देवी याग है, भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चलन होता रहता है। जैसे गौमेध याग है। बेटा! गऊओं की रक्षा करना, वह बेटा! प्रसन्नचित जब होते हैं तो गौमेध याग हो जाता है। जैसा तुम्हें स्मरण होगा, जब मुनिवरों! देखो गऊएँ प्रसन्न हो करके दुग्ध को प्रदान करती रहती हैं। उसको मानव याग इत्यादि कार्यों में बेटा! परणित करता है तो वह गौमेध याग कहलाता है। उसका तृण, उसकी वृत्तियाँ मानों देखो उसके अन्नाद से तृप्त करना चाहिए और प्रसन्न रहना चाहिए।

जिस राजा के राष्ट्र में या जिस समाज में, मानो प्राणी एक-दूसरे से प्रसन्न रहता है, एक-दूसरे में पिरोया हुआ सा दृष्टिपात आता है मेरे पुत्रों! देखो वह राष्ट्र महान् पवित्र कहलाता है। और जहाँ एक प्राणी दूसरे से दुःखित रहता है, एक प्राणी दूसरे से ओत-प्रोत की भावना नहीं विचार रहा है, जानो कि उस राजा का राष्ट्र बेटा! नारकिक कहलाता है। आज बेटा! मैं तुम्हें राष्ट्र के ऊपर नहीं, केवल याग के सम्बन्ध में विवेचना दे रहा था क्या याग अपने में कितना महान् और कृतियों में रत्त रहा है।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का जीवन

आओ मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें कई समय से याज्ञवल्क्य मुनि

महाराज की विवेचना दे रहा था। मुनिवरों! उनके यागों की चर्चाएँ हो रही थीं क्या वो अपने विद्यालय में ब्रह्मचारियों को याग के सम्बन्ध में उनका कितना गम्भीर अध्ययन, कितना तपस्या में जीवन रहा है, उन्होंने इस ब्रह्माण्ड को और पिण्ड को, दोनों का एक ही समन्वय किया है अथवा बाह्य जगत और आन्तरिक जगत, दोनों का उन्होंने समन्वय किया है। इसी सन्दर्भ में हम जब यह विचारने लगते हैं कि हमारा याग कितना पवित्र और ऋषि-मुनियों ने इसके ऊपर कितना अध्ययन किया है, कितनी गम्भीरता से मुनिवरों! देखो उसका मनन किया है।

महर्षि भारद्वाज मुनि आश्रम में याग के ऊपर अध्ययन

आओ मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें, देखो एक आसन पर ले जाना चाहता हूँ, जहाँ याग के ऊपर बेटा! ऋषि-मुनि अपने में अध्ययन करते रहते थे। मेरे पुत्रों! देखो, हमारे यहाँ देखो ''वर्णम् ब्रव्हा क्रम धारासुति सञ्जनम्'', मेरे प्यारे! देखो कुछ वेद मन्त्रों के ऊपर विचार-विनिमय किया गया। महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ नाना प्रकार के याग के ऊपर बेटा! अन्वेषण होता रहता था। जहाँ वो मानो देखो परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर उनका अध्ययन होता रहा वहीं मुनिवरों! देखो, उनकी जो अध्ययन की प्रतिक्रिया थी, वह केवल यह कि याग के ऊपर मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी कवन्धि, सुकेता, ब्रह्मचारिणी गार्गी, यज्ञदत्ताः और मुनिवरों! देखो सोमकेतु नाना ब्रह्मचारी बेटा! अध्ययन करते रहते थे। मेरे पुत्रों! जब वे अध्ययन करते रहे तो कुछ ऋषि-मुनियों का किसी समय समूह वहाँ परणित हो जाता, तो बेटा! देखो उन्होंने एक यज्ञशाला का निर्माण किया था। जिस यज्ञशाला में बेटा! याग करने से उन्होंने यह अनुभव किया कि **हमारा जो याज्ञिक शब्द है, वेद मन्त्रों से सुगठित वाला जो शब्द है अथवा स्वाहा है, वह कहाँ जाता है।** तो मेरे पुत्रों! देखो एक समय महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में बेटा! महर्षि पण्पेतु ने, यह ब्रह्मचारियों के मध्य में एक प्रश्न लाए और उन्होंने

जिज्ञासा प्रगट की, और वेद मन्त्र बेटा! यह उद्गीत गा रहा था ''चित्रम् रथम् ब्रह्मा व्रतम देवत्वम् ब्रहा, वैदे सञ्जनम् बृही कर्ताः।''

बेटा! वेद का मन्त्र यह कह रहा था, क्या चित्रों समाब्रहे, मानो देखो याग का जो चित्र है वह चित्र द्यौलोक में प्रवेश कर जाता है। क्योंकि द्यौ मण्डल ही एक ऐसा मण्डल है, जहाँ बेटा! सर्वत्र चित्रों की स्थिरता वहाँ हो जाती है। तो मेरे पुत्रों! देखो जब वह, यह वाक्य देखो ब्रह्मचारियों के मध्य में जब वेद मन्त्र आया तो वेद मन्त्रों में एक वाक्य और विचारा ''मम्त्वाम् ब्रह्मणे मातस्सुतः प्रवहा गर्भस्वसञ्जनम् बृही वृतम् देवत्वा'' तो ये वेद की आख्यायिका उन्हें और स्मरण आयी। और उन्होंने कहा ''शम्भूः ब्रह्मणे ब्रहा'' मेरे प्यारे! देखो, ऋषि-मुनि इसके ऊपर अध्ययन करने लगे, और **ब्रह्मचारी सुकेता ने यह प्रसङ्ग लिया। उन्होंने कहा कि हम याग के कर्मकाण्ड को या याग की चित्रावलियों को जब जान सकते हैं** जबकि हम माता के गर्भाशय में जो एक बिन्दु है और बिन्दु में शिशु है। हम उसको जब तक इसकी प्रतिक्रिया को न जान सकेंगे जब तक हम इसको नहीं जान सकेंगे। मेरे प्यारे! देखो एकोऽम् ब्रहा, माता के गर्भस्थल में एक बिन्दु है, उस बिन्दु में शिशु है और शिशु का मानो देखो माता के गर्भ में निर्माण हो रहा है। और निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है। वो निर्माणशला है एक प्रकार की, उस प्रभु की विज्ञानमयी एक रचना है। मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मचारी सुकेता ने इसके ऊपर अध्ययन करना प्रारम्भ किया।

मेरे पुत्रों! जब अध्ययन करते रहे, करने के पश्चात् उन्हें एक यन्त्र की अनुभूति हुई क्या मुनिवरों! देखो **एक-एक रक्त के बिन्दु में जो मानव का चित्र विद्यमान है उसको दृष्टिपात करो।** मेरे पुत्रों! उन्होंने एक यन्त्रशाला का निर्माण किया। और यन्त्रशाला का जब निर्माण किया तो मेरे पुत्रों! देखो उन्हें यन्त्रम् ब्रव्हा, उस यन्त्र में एक रक्त का बिन्दु प्रवेश करने से, मेरे पुत्रों! जिस मानव का वो रक्त का बिन्दु है

वह उस मानव का चित्र मेरे प्यारे! उन यन्त्रों में साक्षात्कार दृष्टिपात आने लगा। उन्होंने यन्त्रों का निर्माण किया। परन्तु यन्त्रों के निर्माण, इसी को ले करके उन्होंने एक यज्ञशाला में एक कृतिका का निर्माण किया, एक यन्त्र का। मेरे पुत्रों! देखो, शब्द जैसा भी है, उसी प्रकार का शब्दः उसका आकार और उसी में मुनिवरों! देखो चित्र दृष्टिपात आना, ये सर्वत्र उसमें दृष्टिपात आने की प्रतिभा बन गयी।

मेरे प्यारे! देखो जैसे यजमान अपनी यज्ञशाला में विराजमान हो करके मुनिवरों! देखो ''यज्ञम् भव प्रव्हा'' वे यन्त्रों को स्थिर करते थे। ऋषि-मुनियों का जब भी भारद्वाज मुनि के यहाँ, बेटा! देखो समागम या तो ऋषि-मुनियों का समूह आता रहा। उसी समय **उनके यहाँ एक नियम था कि उनके यहाँ याग करो।** साकल्य विद्यमान है, घृत विद्यमान है। मेरे पुत्रों! देखो उसमें **याग करो, विधि विधान के द्वारा।** तो महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ चौबीस कोणों की यज्ञशाला थी। जैसा मैंने इससे पूर्व काल में वर्णन किया था बेटा! क्या चौबीस कोणों की यज्ञशाला में याग होने लगा। यम ब्रह्मे वह देखो ऋषि-मुनियों को समूह आया। उनमें से कोई बेटा! ब्रह्मा बना, कोई उद्गाता बना, कोई अध्वर्यु बना और कोई यजमान और पुरोहित बन करके बेटा! याग प्रारम्भ होने लगा। **जैसे याग प्रारम्भ हुआ, उन्होंने अग्निहोत्र किया** तो बेटा! देखो जैसे अग्नि में स्वाहा उच्चारण करते थे वही स्वाहा मेरे पुत्रों! देखो, वह यन्त्रों में द्यौलोक को जाता हुआ दृष्टिपात आने लगा। मेरे पुत्रों! देखो **स्वाहा उच्चारण करने वाले का शब्द भी है और उसके चित्र भी हैं और मुनिवरों! देखो उनका क्रियाकलाप भी उसके साथ विद्यमान है।** वह सर्वत्र दृष्टिपात आ रहा है।

आओ मेरे पुत्रों! देखो मैं इस सम्बन्ध में विशेषता में नहीं, केवल तुम्हें ये परिचय देने के लिए आया हूँ क्योंकि **प्रत्येक वाक्यों का परिचय ही दिया जाता है, वो भी संक्षिप्त में,** क्या मुनिवरों! देखो वह

चित्रों वृथम ब्रहा, जब इस प्रकार के ऋषि-मुनियों के चित्र उसमें दृष्टिपात आने लगे यन्त्रों में, तो मुनिवरों! देखो, ऋषि ने ''ब्रहे कृतम् ब्रह्मा'' बेटा! देखो भारद्वाज के चरणों की वन्दना की। उन्होंने कहा, प्रभु धन्य है हम जिन वाक्यों को वेद मन्त्रों में या अपने मानो विज्ञानवेत्ताओं के समीप इसको यह उद्गीत गाते रहे हैं कि **शब्द की क्या-क्या गतियाँ हैं।** हम गतियों में पहुँच गए हैं परन्तु हमें अपने में सम्पूर्णता से निर्णय नहीं हो सका है। मेरे प्यारे! देखो जब उन्होंने ऐसा व्रत किया, तो ''ब्रह्मेः कृतम्'' क्या आज हमारा बड़ा सौभाग्य है जो इनको दृष्टिपात कर रहे हैं। भारद्वाज मुनि महाराज बड़े प्रसन्न हुए।

मुनिवरों! उनके यहाँ नाना विज्ञानशालाएँ, चित्रशालाएँ, ऐसी-ऐसी चित्रशालाएँ–मेरे पुत्रों! देखो, एक समय सोमकेतु ददद्ड़ गोत्रीय, महर्षि भारद्वाज मुनि के समीप आ पहुँचे और उन्होंने कहा, हे प्रभु! मैं अपने **पूर्वजों का यन्त्रों में दर्शन** करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा, बहुत प्रियतम। उन्होंने कहा, कहीं एक रक्त का बिन्दु, कहीं भी तुम्हारे पिता, महापिताओं का तुम्हें प्राप्त हो जाए तो हम तुम्हें दर्शन करा सकते हैं। तो मुनिवरों! देखो, महर्षि सोमकेतु ददद्ड़, अपने ददद्ड़ गोत्रीय, जब अपने गृह में जब उन्होंने प्रवेश किया तो उनके पूर्वजों के बहुत से संग्राहलय थे। मेरे पुत्रों! उनमें बहुत से एक संग्राहलय में कहीं एक वस्त्रकार, उन्हें कहीं एक रक्त का बिन्दु प्राप्त हो गया, कहीं अपने छठे महापिता का। जो संसार में नहीं थे। मेरे पुत्रों! देखो, उस वस्त्र को ले करके वे महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में पधारे और भारद्वाज मुनि से कहा, प्रभु! ये अमृतम् ब्रह्माः ये एक रक्त का बिन्दु, मेरे महापिता जो छठे महापिता जी को एक सौ अस्सी वर्ष, मानो जो संसार में नहीं है। इतना समय हो गया शरीर और आत्मा को पृथक हुए। हे प्रभु! देखो, ये तो मुझे प्राप्त हुआ है। भारद्वाज मुनि बोले, क्या ये तो पर्याप्त है। तो ब्रह्मचारी सुकेता, कवन्धि और भारद्वाज, मानो देखो अपनी स्थली पर उन यन्त्रों में उस रक्त के मानो उस वस्त्र को उसमें प्रवेश

किया। यन्त्र में तो बेटा! देखो, उन चित्रावलियों में, मानो देखो, उनके छठे महापिता का दर्शन होने लगा। मेरे पुत्रों! देखो, विज्ञान अपने कक्ष में सदैव गमन करता रहा है। एक-एक रक्त के बिन्दु में मुनिवरों! देखो, प्रत्येक मानव का, उसी मानव का चित्र विद्यमान है जिस मानव का वृत्ति कहलाता है।

मेरे पुत्रों! देखो, एक ही नहीं, नाना प्रकार की विज्ञानशालाएँ, विज्ञानशालाओं में **शिकामकेतु उद्दालक** के यहाँ चले जाओंगे तो बेटा! वहाँ तुम्हें, कुछ और ही प्राप्त होगा। महर्षि शिकामकेतु उद्दालक तो एक सौ पाँच वर्ष तक बेटा! याग करते रहे और यागों में अन्वेषण करते रहे, अनुसन्धान करते रहे। परन्तु देखो अपने पूर्वजों के चित्रों में चित्रित होने लगे। तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार आता है, आज मैं उन वाक्यों की पुनरुक्ति करने नहीं जा रहा हूँ। केवल विचार कि हम देखो, उन यागों में परणित हो जाएँ, उन यागों को विचारने लगें। मानो देखो जो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने अपनी विज्ञानशाला में जानने का प्रयास किया।

विचित्र क्रियाकलाप

मेरे पुत्रों! देखो विचार आता रहता है ऋषि-मुनियों ने याग के ऊपर जो अन्वेषण किया है अथवा अनुसन्धान किया है वह बड़ा विचित्र है। इसीलिए यह पालक है। इसीलिए वेद इसको विष्णु याग कहता है। विष्णु कहते हैं, पालन करने वाले को। बेटा! **यजमान अपने द्रव्य का जब सदुपयोग करता है तो वो ये नहीं, देखो अन्तिम चरम सीमा तक द्रव्य का उपयोग है** क्योंकि साकल्य ला रहा है, घृत को ला रहा है और आहुति, समिधा में अग्नि प्रदीप्त करके उसे याग में, देवताओं के याग में, अग्नि के मुख में परणित कर देता है। और अग्नि देवताओं का ''मुखम् ब्रह्मे कृतम् देवत्वाम्' वह अग्नि मेरे पुत्रों! देखो उसको चहुँमुखी बना देती है। और देवत्व मेरे पुत्रों! देखो ''परोक्षाम् भूतम् ब्रह्मा'' वह अपने में, मेरे पुत्रों! देखो, बड़ा विचित्र क्रियाकलाप है जो यजमान

अपनी यज्ञशाला में कर रहा है। मानो द्रव्य को देवताओं को प्रदान करता है जिससे देखो द्रव्य अमृताम् देखो अग्नि के मुखारबिन्दु में प्रवेश करने से न तो कोई शत्रु रहता है न कोई मानो देखो किसी प्रकार का निन्दक रहता है। निन्दक रहता है तो उसी को प्राप्त होता रहता है।

आओ मेरे पुत्रों! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं, केवल ये कि क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और याग के ऊपर जो ऋषि-मुनियों ने अनुसन्धान किया है अथवा चित्रों में चित्रित होते रहे हैं। अब मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, अब मेरे प्यारे! महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

''ओ३म् यमा रथम् ब्रह्मणाः विश्वश्चमा रेवम् भद्रा''

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव यागों के सम्बन्ध में बड़ी ऊर्ध्वा में उड़ाने उड़ रहे थे क्योंकि उनकी उड़ान परम्परागतों से ही बड़ी विचित्र मानी गयी है। बाल्यकाल में जब हम पूज्यपाद गुरुओं के द्वारा अध्ययन करते रहे उस काल में भी उड़ान बड़ी विचित्र उड़ी जाती थी और **याग के सम्बन्ध में जितना अध्ययन किया जाए उतना ही सूक्ष्मतम कहलाता है।** परन्तु इसी याग पर नाना प्रकार के आक्रमण भी हुए हैं। पूज्यपाद गुरुदेव तो उस आक्रमण को उतना नहीं जान पाते। परन्तु महाभारत के काल में और उसके पश्चात् याग के ऊपर आक्रमण होना प्रारम्भ हुआ और यागों में देखो अर्थों को न जान करके याग के ऊपर उन्होंने एक अशुद्धिकरण का और अपने स्वार्थपरता का उन्होंने अपना परिचय दिया।

नाना प्रकार के यागों की विवेचना

जब मैं यह कहता रहता हूँ पूज्यपाद से, प्रभु आपने वाजपेयी याग का वर्णन किया है, अग्निष्टोम याग का नामोकरण उद्‌गीत गाया है और

अजामेध और अश्वमेध, ये आपने यागों का वर्णन किया। परन्तु महाभारत काल के पश्चात् इन अर्थों को न जान करके, स्वार्थपरता में देखो वह अपने-अपने मनमाने अर्थों को ले करके उन्होंने याग के ऊपर आक्रमण किया। जैसे अग्निष्टोम याग में बैल की बलि का वर्णन है। परन्तु देखो बलि का अर्थ केवल पुरुषार्थ को न जान करके, देखो मध्यकाल में, उसको देखो, केवल एक बलि का स्वरूप दिया। और **बलि का अर्थ केवल पुरुषार्थ है** मेरे पूज्यपाद! गुरुदेव की भाषा में। मैं आधुनिक भाषा नहीं दे रहा हूँ। जो पूज्यपाद गुरुदेव हमें विश्लेषण कराते रहते हैं और हम भी उसका विश्लेषण करते रहे हैं। परन्तु आधुनिक काल में देखो महाभारत के पश्चात् वाममार्ग आया और वाममार्ग ने यागों के ऊपर आक्रमण किया। क्योंकि **याग जब तक जीवित है संसार जीवित है।** और याग अगर मृत्यु को प्राप्त हो गया तो संसार की भावनाएँ ही मृतक बन जाती हैं। ऋषि-मुनियों की विचारधारा मृतक बन जाती है। जब इस प्रकार देखो अर्थों का अनर्थ हुआ। देखो, जैसे गौमेध याग में गौ का वर्णन है और अजामेध में बकरी की बलि का वर्णन है। अश्वमेध याग में अश्व, घोड़े का वर्णन है। क्या उसकी इन्द्रियों की आहुति दी जाए तो इस प्रकार का क्योंकि देखो अर्थों का अनर्थ है। अजामेध में तो देखो अजा कहते हैं बुद्धि को जो किसी से विजय न हो सके। अजा कहते हैं देखो बल को जो किसी से वह, मानो परास्त न हो सके। अजा कहते हैं ज्ञानी को, जो ज्ञान में किसी से, मानो देखो अपने में, अपने में कोई भी अग्रगणीय न हो वो परमपिता परमात्मा के ज्ञान में रत्त रहने वाला हो। इसी प्रकार अजामेध याग का अभिप्राय, पूज्यपाद गुरुदेव ने उसका अर्थ करते हुए कहा, क्या देखो जो अश्व नाम, देखो अश्व पर्यायवाची शब्द है। अश्व नाम परमपिता परमात्मा का है। अश्व नाम राजा का है और अश्व नाम देखो एक घोड़े को भी कहा जाता है। परन्तु देखो, हे पूज्यपाद! मध्यकाल में इसके अर्थों को न जान करके देखो अजामेध, देखो अजामेध याग देखो

घोड़े को स्वीकार करके, उसके प्रति उसके अङ्गों की देखो यज्ञशाला में बलि प्रदान की गयी है। वह वहाँ बलि का वर्णन आता रहता है।

मैं यह कहता हूँ, हे भोले प्राणियों! याग में कोई बलि नहीं होती। बलि को जो स्वरूप बनता है वो केवल पुरुषार्थ बनता है और पुरुषार्थ ही करना ही अपने लिए मानो देखो अपने को समर्पित कर देना है। इस प्रकार की भावना जब हृदयों में मानो देखो बुद्धिमानों में इस प्रकार आती हैं, तो देखो इसी प्रकार जैसे वाजपेयी याग में बैल ब्रव्हे वृतम्, इस प्रकार का वर्णन आता रहता है। तो मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से जिज्ञासा मैं प्रकट करता रहता हूँ प्रभु! इन्होंने मेरी बहुत सी जिज्ञासाएँ समाप्त की हैं। तो विचार आता रहता है, जो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी वर्णन किया है, कितने और भी नाना याग हैं। यहाँ नाना देखो, नाना प्रकार के यागों का कर्मकाण्ड, उनकी प्रतिभा मानो मानवीय मस्तिष्कों में सदैव और ऋषि-मुनियों के आङ्गन में विद्यमान रही है।

यजमान को आशीर्वाद

मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहता रहता हूँ, पूज्यपाद! देखो आज जहाँ हमारी ये जो आकाशवाणी जा रही है, वहाँ एक याग का आयोजन हुआ है। मेरा अन्तरात्मा याग में, याग को दृष्टिपात करता हुआ बड़ा प्रसन्न रहता है और मैं यजमान से कहता रहता हूँ, हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। क्योंकि मेरा अन्तर्हृदय यजमान के साथ होता है और मैं यह कहा करता हूँ क्या जिस राज्य, जिस माह अमृतम् पुरुष के यहाँ द्रव्य का सदुपयोग होता है वह बड़ा सौभाग्यशाली है। क्योंकि **द्रव्य का सदुपयोग होना ही बहुत अनिवार्य है।**

वाममार्ग

हे यजमान! ये जो काल चल रहा है यह ऐसा काल है, जिसे मैं वाममार्ग का काल कहता हूँ। जहाँ राजा भी वाममार्गी है, प्रजा भी

वाममार्गी है। जहाँ देखो, देखो वाममार्ग प्रचलित हो रहा है। और **वाममार्ग उसे कहते हैं** जहाँ सुरा, सुन्दरी और जहाँ देखो द्रव्य की लोलुपता में प्राणी लगा रहता है। ये ''तीनम् ब्रह्मा लक्षणम्'' ये लक्षण हैं वाममार्ग काल के, मानो देखो राजा भी उसी में, प्रजा भी उसी में, सर्वत्र देखो, देवियाँ भी उसी में, जब इस प्रकार का देखो क्रियाकलाप समाज का बन जाता है तो वो काल वाममार्ग है। क्योंकि उनके मार्ग को गमन करने वाले को ही हम वाममार्गी कहते हैं, जो उनके मार्ग पर गमन करता है। जो सुमार्ग पर गमन करता है वह महान् कहलाता है, सुमार्गी कहलाता है। तो इसीलिए हमारा जो विचार है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से नाना प्रकार की जिज्ञासाएँ हम प्रगट करते रहे हैं। इन्होंने बहुत से अपने मन्तव्य दिए।

राजा कैसा हो?

विचार केवल यह कि राजा भी महान् बनना चाहिए। क्योंकि राजा के राष्ट्र में क्रान्तियाँ रक्तमय नहीं होनी चाहिए। जब राजाओं के राष्ट्र में रक्तभरी क्रान्ति का संचार हो जाता है, मानव, मानव को नष्ट करने लगता है यह सब वाममार्ग कहलाता है। और क्यों कहलाता है, क्योंकि राजा अपने में अपने को नहीं जान रहा है, राजा प्रजा को नहीं जान रहा है इसीलिए देखो राजा ब्रह्मज्ञानी नहीं है। राजा को ब्रह्मज्ञानी होना चाहिए। एक समय देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया। क्या एक समय भगवान् मनु ने अपने महापुरोहित से कहा, देखो कालेत्वर मुनि से कि महाराज मैं यह जानना चाहता हूँ कि राजा कैसा होना चाहिए जो प्रजा का नेतृत्व करने वाला हो, वह कैसा हो? तो उस समय कालेत्वर ऋषि ने कहा था भगवान् मनु से, क्या राजा ब्रह्मज्ञानी होना चाहिए। जिसे ब्रह्म का ज्ञान हो, ब्रह्म की प्रतिभा को जानने वाला हो। और ब्रह्मज्ञानी ही राजा अपनी प्रजा को ब्रह्मवेत्ता बना सकता है, तो इस प्रकार देखो, वह श्रवण कर के मौन हो

गए। तो कालेत्वर ऋषि ने बेटा! इस राष्ट्रवेत्ताओं का निर्माण करते हुए ये कहा, क्या राजा को ब्रह्मवेत्ता बनना चाहिए जिससे राजा के राष्ट्र में ईश्वर के नाम पर रूढ़ि नहीं पनपनी चाहिए। जब रूढ़ियाँ पनप जाती हैं तो ये राष्ट्र विनाश के मार्ग पर चला जाता है।

विचार आता रहता है, पूज्यपाद गुरुदेव से मैंने कई काल में वर्णन कराया। आज वो वर्तमान का काल उसी प्रकार का है। नाना प्रकार की रूढ़ियाँ हैं और वे रूढ़ियाँ सर्वत्र देखो, राष्ट्र के विनाश के लिए हैं। विचार आता रहता है, मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराया ये जाने, न जाने, परन्तु यहाँ देखो, मुहम्मद के मानने वाले, नानक के मानने वाले और ईशु को मानने वाले और भी नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बनी हुई हैं, ईश्वर के नाम पर। इसीलिए धर्म एक है और रूढ़ि अनेक कहलाती हैं। इसीलिए रूढ़ि नहीं रहनी चाहिए और धर्म रहना चाहिए। जो ईश्वरीय, मानवीय धर्म दोनों का कटिबद्ध, मानो दोनों का समन्वय हो जाए।

मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा है कि जितनी भी रूढ़ियाँ हैं वे राष्ट्र तक सीमित रहती हैं। आत्मज्ञान से उनका कोई समन्वय नहीं है। आत्मा के स्वरूप को वो जान नहीं पाते। कोई कहीं आत्मा स्वीकार कर रहा है, कोई कहीं आत्मा स्वीकार कर रहा है। तो इस प्रकार देखो यहाँ चेतना में भी अभाव जब स्वीकार करने लगता है जो समाज, जो सम्प्रदाएँ, ऐसे राजा, वो राजा ब्रह्मज्ञानी हो और ब्रह्मज्ञानी हो करके, जितने रूढ़ियों के आचार्यों को एकत्र किया जाए और उनका शास्त्रार्थ अथवा विचार-विनिमय होना चाहिए। एक-दूसरे की जिज्ञासापूर्ण होनी चाहिए। और राजा को मध्यस्था करनी चाहिए और राजा जब मध्यस्थ बनेगा तो ब्रह्मवेत्ता तो इसी प्रकार ''भूः सम ब्रव्हा'' वो देखो अपनी रूढ़ियों को समाप्त कर सकता है। और जब रूढ़ि समाप्त हो जाएँगी, ईश्वर के नाम पर जहाँ रूढ़ियाँ समाप्त हुई वहीं शान्ति की स्थापना होगी। वहाँ एक दूसरा प्राणी, प्राणी को नष्ट नहीं कर पाएगा।

राजा का निर्वाचन

विचार आता रहता है, मैंने अपने पूज्यपाद से कई काल में ये वाक्य प्रगट करते हुए कहा था और विचार देते हुए कहा था, हे पूज्यपाद! ऐसे राष्ट्र का निर्माण होना चाहिए। क्योंकि मैंने तो पुरातन काल में कहा है कि राजाओं का जब भी निर्वाचन हुआ है वह ब्रह्मवेत्ताओं के द्वारा होना चाहिए या जिज्ञासुओं के द्वारा। देखो, अविवेकियों के द्वारा अविवेकियों का निर्वाचन देखो राष्ट्र के लिए लाभप्रद नहीं होता वह समाज को अन्धकार में ले जाता है।

असम्भव को सम्भव बनाने का मार्ग

इसीलिए मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में ये वाक्य प्रगट करते हुए कहा था। क्या हे भगवन्! देखो इसीलिए मैं कहता रहता हूँ, क्या समाज को ऊँचा बनना है और याग की पद्धति को महान् बनाना है। क्योंकि वह विज्ञान में, ज्ञान में, रक्षा में, तीनों में मानो देखो याग ही हमें बल देता है। और उस याग के बल को हम अपने में धारण करते हुए बलवती हो जाए। ऐसा मेरा मन्तव्य रहा है। मेरे आचार्यों ने तो बहुत सी वार्त्ताएँ प्रगट की हैं इसके ऊपर बहुत चिन्तन और मनन किया है। जैसे पूज्यपाद गुरुदेव का अनुभव याग के सम्बन्ध में बड़ा विचित्र बन करके रहा है, महान् बन करके रहा है। याग का अभिप्राय ये कि जितने भी सुक्रियाकलाप हैं, वे सर्वत्र का नाम एक याग कहलाता है। जिसमें सर्वताः हो, जिसमें मानो जगव्रतम् मानो जिसमें व्यष्टि से समष्टि के मार्ग पर गमन करने वाला हो। तो इस प्रकार का जो बिखरे विचारों को मैं देने के लिए आया हूँ। विचार यह कि राजा को अश्वमेध याग करना चाहिए। प्रजा और राजा दोनों मिल करके जब याग करते हैं, अग्निहोत्र करते हैं, सुगन्धि विचारों की करते हैं। वेद मन्त्रों की ध्वनियों से सुगन्धि होती है। साकल्य के द्वारा मानो देखो उसकी सुगन्धि और रक्षा होती है तो उसको राजा को उन क्रियाकलापों

को करते हुए अपने राष्ट्र को उन्नत बनाना चाहिए। और ईश्वर के नाम पर रूढ़ियाँ नहीं रहनी चाहिए। यदि राजा के राष्ट्र में रूढ़ियाँ बनी रहेंगी तो एक समय राजा का राष्ट्र अग्नि का काण्ड बन करके रह जाएगा। मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये वाक्य कहा था। मैं आज विशेष चर्चा देने नहीं आया हूँ। विचार ये है, क्या देखो अपने राष्ट्र को उन्नत बनाना, प्रजा को प्रसन्न रहना, ये मानो जभी हो सकता है जब कि राजा ब्रह्मवेत्ता हो, ब्रह्मज्ञानी हो, निर्वाचन प्रणाली पवित्र हो। विद्यालयों में निर्वाचन प्रणाली पवित्र हो। तभी तो ये असम्भव देखो असम्भव ब्रहे, असम्भव को सम्भव बनाया जा सकेगा। अन्यथा देखो ये संसार गमन कर ही रहा है। कोई वाक्य नहीं, मैं भी अपने विचार देता रहता हूँ। ये तो हमारे उद्‌गार हैं अन्तर्हृदय में, जो विचार हैं, उनको देना बहुत अनिवार्य है।

मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये वाक्य उच्चारण करता और मेरा अन्तर्हृदय यही कहता रहता है, हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। जिस गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता है वो गृह बड़ा सौभाग्यशाली है, देवत्व कहलाता है। और जिस गृह में द्रव्य का दुरुपयोग होता है, सुरा में लगाया जाता है वो गृह नारकिक कहलाता है। उस गृह, वो गृह उन्नत नहीं हो पाता। इसीलिए देखो मैं अपने इन विचारों को देता हुआ, अपने विचारों को विराम देने के लिए आया हूँ। क्योंकि मैं एक याग को दृष्टिपात कर रहा था।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी मेरे प्यारे! महानन्द जी ने बड़े विचित्र विचार दिए। इनके विचारों में बड़ा एक उद्‌गार है, विडम्बना है। मानो उस विडम्बना के साथ ही अपने विचारों को व्यक्त करते रहते हैं और उनके विचारों में राष्ट्रीयता, आध्यात्मिकवाद, मानो वो उनकी आभा में निहित रहता है। इनके विचारों में मैं परमपिता परमात्मा से सदैव ये

प्रार्थी रहता हूँ, क्या ऐसे काल, ऐसे राजा भी समय-समय पर आते रहे हैं। काल आएगा, आते रहेंगे। इनकी विडम्बना भी पूर्ण हो सकेगी। जो इनके हृदय में एक दाह है, एक विडम्बना है, एक मानो देखो प्रबलता है जो इनका हृदय पुकार कहता है वह परमपिता परमात्मा के आश्रित रहता है। ये आज का विचार ये क्या कह रहा है, क्या हमारे ऋषि-मुनियों ने याग के ऊपर बड़ा अध्ययन किया है और यागों में बड़ा महत्त्व माना गया है। इन यागों की व्याख्या तो हम किसी काल में ही कर पाएँगे। परन्तु आज का विचार-विनिमय क्या हमारा कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता मानो देखो ये जो हमारा ज्ञान और विज्ञान है ये आध्यात्मिक और भौतिकवादों में, दोनों में परणित रहता है। दोनों में ही गमन करता रहता है। इसीलिए आज का विचार ये अब सम्पन्न होने जा रहा है।

आज के विचारों का अभिप्रायः कि विज्ञान अपने कक्ष में गमन करता रहा है और विज्ञान मानो देखो मानवीय मस्तिष्क की महानता है। जब महानता के आधार पर मानव विज्ञान का विकास करता है तो वह विज्ञान सार्थक बन जाता है। और विज्ञान का जब भी दुरुपयोग हुआ है, उसी काल में राष्ट्र और समाज देखो नारकिक बन गया है। ये चर्चाएँ हम कल प्रगट करेंगे। आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

''ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् ब्रहा गत्प्राहा
प्राणानत्वा रेवम् आपा ऋषिः वायाऽयाम्।

महर्षि महान्नद जी–अच्छा भगवन्!

पूज्यपाद गुरुदेव–आनन्द रहो!

दिनाँक : 26 जनवरी, 1990

॥ ओ३म् ॥

प्रकाश का कुञ्ज

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया क्योंकि हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। इसलिए वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है और उसका जो रचाया हुआ व्रतम ब्रहा यह जो ब्रह्माण्ड है यह भी अनन्तवान् है क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक मानव इसके ऊपर अन्वेषण करता रहा है परन्तु विचार-विनिमय करते-करते बहुत दूरी चले जाते हैं अपने जीवन को क्रियात्मक बनाते हुए परन्तु यह ब्रह्माण्ड एक अनन्तवान् में दृष्टिपात आता रहता है। जब यह अनन्तमयी दृष्टिपात आता रहता है तो अन्त में मानव की इन्द्रियाँ उसके चिन्तन और मनन करने में शान्त हो जाती हैं और वह अनन्तवान् उच्चारण करके अपने में मौन हो जाती हैं। तो इसलिए हम उस परमपिता परमात्मा को अनन्तवान् अथवा उसकी अनन्तमयी महिमा को जानते हुए और उसका चिन्तन और मनन करना चाहिए क्योंकि प्रत्येक मानव सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक उसके ऊपर अन्वेषण करता रहा है और नाना प्रकार के ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहा है और साधना करता रहा है। परन्तु उस आनन्दमयी प्रभु के लिए मानव आनन्द के लिए अपने को जानने में

लगा हुआ है और परमपिता परमात्मा को इसलिए वह अपने में धारण करना चाहता है कि मैं अनन्तवान् और आनन्दमयी हो जाऊँ। तो मुनिवरों! उस परमपिता परमामा की जो महिमा है उसको जानते हुए हमें इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करना चाहिए।

परमपिता परमात्मा की महिमा

आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्रः उस परमपिता परमात्मा की महिमा का यशोगान गा रहा है। हमारा प्रत्येक वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा का वर्णन कर रहा है। जिस प्रकार माता का पुत्र माता का वर्णन कर रहा है अथवा उसका यशोगान गा रहा है। इसी प्रकार ये पृथ्वी जैसे ब्रह्माण्ड की गाथा गाती रहती है और यह ब्रह्माण्ड का वर्णन करती रहती है कि यह ब्रह्माण्ड कितना अनन्तमयी है। इसी प्रकार प्रत्येक वेद मन्त्र के गर्भ में अथवा चिन्तनीय बनाने से यह प्रतीत होता है क्या वह परमपिता परमात्मा का प्रत्येक वेद मन्त्र अपना गान गा रहा है। जैसे माता का पुत्र माता का गान गा रहा है, जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। इसी प्रकार प्रत्येक वेद मन्त्रः उस परमदेव आनन्द का गान गा रहा है। तो मुनिवरों! हमारे आचार्यों ने इसके ऊपर बड़ा अन्वेषण किया है और विचार-विनिमय किया है कि हम उस परमपिता परमात्मा की महती और उसके अनन्तमयी जगत को जानने के लिए सदैव तत्पर रहें। माता के गर्भस्थल में मानो हम जैसे शिशु विद्यमान होते हैं परन्तु माता को उस समय वसुन्धरा के नाम से वर्णन किया करते हैं। हे वसुन्धरम्! ब्रह्मा ब्रहा क्रतम देवाः हे माता वसुन्धरा हम तेरे गर्भ-स्थल में विद्यमान हैं। परन्तु जब माता के गर्भ से यह जीवम् ब्रहा शिशु पृथक हो जाता है तो यही मुनिवरों! पृथ्वी माता और वसुन्धरा की गोद में आ जाता है और यह वसुन्धरा अपने में धारण करने लगती है नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को देकर के मानव के जीवन को उज्जवल और महान्

बना देती है प्राणी मात्र उस माता का वर्णन करता है क्योंकि उसी के गर्भ में हम वशीभूत हैं। हे माता! तू वसुन्धरा है और तेरे ही गर्भस्थल में हम सब वशीभूत रहते हैं।

प्रथम मनका

मेरे प्यारे! देखो यह पृथ्वी भी ब्रह्माण्ड की गाथा गाती रहती है। विज्ञानवेत्ता भी इसके गर्भ में जब प्रवेश करते हैं तो नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थों में अन्वेषण करते रहते हैं और इसके गर्भ को वह जानते रहते हैं इसके गर्भ में क्या-क्या वस्तु विद्यमान है। कहीं मानो स्वर्ण जैसी धातु का निर्माण हो रहा है, कहीं रत्नों का निर्माण हो रहा है और कहीं मुनिवरों! देखो जल को शक्तिशाली बनाया जा रहा है जो वाहनों में क्रीड़ा कर रहा है। इसी प्रकार इस पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार का खाद्यान्न विद्यमान रहता है। जब वैज्ञानिकजन इस वसुन्धरा की गोद में जाते हैं और वसुन्धरा के गर्भ में विचार-विनिमय करना प्रारम्भ करते हैं तो नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों की उत्पत्ति हो जाती है और उसी में मानव रत्त हो जाता है, उसी में विज्ञान की नाना प्रकार की उपलब्धियों को प्राप्त करने लगता है। तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्र कह रहा है नमं ब्रह्मा वसुन्धरम् ब्रह्मा कृतो मानो वह वसुन्धरा है जिसके गर्भ में सर्वत्र मानो देखो विद्यमान रहते हैं। मेरे पुत्रों! देखो जब भी विज्ञानवेत्ता पनपे हैं इस संसार में तो उस माता पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश हुए हैं। और उसके गर्भ में जो नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ बह रहा है उसको क्रिया में लाने का प्रयास किया और क्रिया में प्रयास करने से ही अग्रगणीय बनाते हुए वह प्रथम मानो देखो उस माला का मनका है जिस माला को धारण करके वैज्ञानिकजन मानो नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों की प्रतिभा में रत्त हो जाते है और लोक-लोकान्तरों की आभा में रत्त हो करके और जानने के लिए सदैव तत्पर होते हैं। तो मुनिवरों! देखो यह पृथ्वी ही देखो प्रारम्भ

का एक मनका है जो एक माला में पिरोया हुआ है। इसलिए हमारे यहाँ वसुन्धरा नाम पृथ्वी को कहा गया है कि इसके ऊपर अन्वेषण करता विज्ञानवेत्ता अपने में बहुत दूरी चला जाता है।

तप की महिमा

आओ मेरे प्यारे! मैं विज्ञान की आभा में तुम्हें नहीं ले जा रहा हूँ। केवल विचार-विनिमय यह कि प्रत्येक मानव आध्यात्मिकवाद की चर्चा करना चाहता है, आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करना चाहता है कि आध्यात्मिकवाद कैसे, किसको आध्यात्मिकवाद कहा जाता है इसके ऊपर बेटा! एक वेद मन्त्र आ रहा था यम ब्रह्मा आत्माम् भूतम् ब्रह्मा अस्वति देवाः यह जो आत्मा इस शरीर में वास करने वाला है यह पञ्च महाभूतों का जो यह पिण्ड है इस पिण्ड में रमण करने वाला आत्मा है इस आत्मा को जानना हमारे लिए बहुत अनिवार्य है क्योंकि प्रत्येक मानव को यह आशंका लगी रहती है कि मेरा जीवन मृत्यु को न प्राप्त हो जाए और मृत्यु से वह सदैव अपने में रत्त होता रहता है और प्रकाश के लिए मुनिवरों! वह प्रकाश के कुञ्ज में जाना चाहता है। मुझे स्मरण आता रहता है ऋषि-मुनियों की नाना प्रकार की चर्चाएँ जब होने लगती हैं तो बेटा! देखो ऋषि-मुनि इस प्रकार के ऊपर बड़ा विचार-विनिमय करते रहे हैं। हमारे यहाँ नाना प्रकार की चर्चा करते हुए ऋषि-मुनियों ने नाना प्रकार के प्रश्न उत्तरावलियों में अपनी आभा और अपने ज्ञान को उन्होंने कटिबद्ध किया है।

मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में बेटा! देखो महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के यहाँ नाना ऋषि-मुनियों का एक समूह पहुँचता है जिसमें बेटा! देखो महर्षि प्रह्वान, महर्षि शिलभ, महर्षि दालम्य, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी रोहिणी केतु, चाक्राणी गार्गी, पारेल्वर ऋषि महाराज और

मुनिवरों! देखो वैशम्पायन इत्यादि मुनियों का बेटा! एक समाज महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के यहाँ पहुँचा। गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज अपने आश्रम में बेटा! गाड़ी के नीचे व्यतीत हुए एक सौ पाँच वर्ष हो गए थे जो अपने जीवन में मानो तपस्या में परणित होना है। क्योंकि प्रत्येक मानव व्यक्तव्य को उद्बुद्ध कर सकता है परन्तु जब तक देखो व्यक्तव्य के साथ में उसका क्रियात्मक जीवन नहीं होगा तो उसके व्यक्तव्य का इतना महत्त्व नहीं होता। तो विचार आता है कि मानव को तपश्चम् ब्रह्मा तपो वरणस्तुम देवाः क्या मानव को तपो में रमण करना चाहिए। क्योंकि **तप उसी को कहा जाता है** जो मुनिवरों! देखो प्रत्येक इन्द्रियों का जो विषय है उसको जब जानने के लिए तत्पर हो जाता है और इन्द्रियों को उसमें सजातीय बना देता है तो उसका नाम ही मुनिवरों! देखो तप कहा गया है। हमारे यहाँ यह कहा जाता है रेजबृहा रजसुतम देवम् ब्रह्मा राजन्नम् ब्रह्मे वेद का मन्त्र कहता है कि राजा को तपस्वी होना चाहिए और प्रजा को तपस्वी होना चाहिए। माता और पिता को तपस्वी होना चाहिए, ब्रह्मचरिष्यामि अपने में तपोमय रहना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो यहाँ प्रत्येक मानव के लिए वेद का मन्त्र तप के लिए अपनी महिमा का यशोगान गाता है और कहता है कि राजा को तप इसलिए करना चाहिए राजा जब तपस्वी बनेगा तो उसकी प्रजा उसके राष्ट्र में रहने वाला समाज भी तपस्वी बनेगा। मानो यदि उसका क्रियाकलाप पवित्र है राजा का तो प्रजा का क्रियाकलाप मानो पवित्र बन जाता है और राष्ट्र में उसे मानो राष्ट्र में एक मानवता की आभा परणित होने लगती है और आध्यात्मिकवाद उसका आभूषण बन जाता है। तो इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो आभा ब्रहे क्रतम् देवाः तो इसलिए राजा को तपस्वी होना चाहिए। यहाँ माता-पिता यदि तपस्वी होते हैं तो उसके गृह में रहने वाले बाल्य-बालिका अपने में उन्हीं का आचरण करते हुए स्वयँ तपस्वी बन जाते हैं तो गृह पवित्र बन जाता है। मानो देखो गृह के पवित्र बनने से वहाँ एक आनन्द की तरङ्गे उत्पन्न हो जाती हैं तो

बेटा! उसी का नाम तप है जो अपने में मानव ज्ञान युक्त हो करके और क्रियात्मक जो क्रियाकलाप करता है उसका नाम तप कहा गया है।

गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज और ब्रह्मवेत्ताओं का सम्वाद

आओ मेरे प्यारे! मैं दूरी न चला जाऊँ हम गाड़ीवान रेवक मुनि की चर्चा कर रहे थे। गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के यहाँ जब नाना जिज्ञासु उनके समीप पहुँचे तो गाड़ीवान ने उनको आश्वासन दिया। आओ, विराजो अपने-अपने आसन पर विद्यमान हो गए। गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने नमः हो करके कहा क्या आज मेरा कैसा अहोभाग्य है जो ब्रह्मवेत्ताओं का एक समूह मेरे द्वार पर विराजा है। मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा कहो ऋषिवर तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? तो गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से महर्षि प्रह्लान ने कहा प्रभु हम इसलिए आए हैं कि हमारा एक समूह भयङ्कर वनों में मानो विराजमान है और विचार-विनिमय कर रहे थे और विचार-विनिमय यह हो रहा था प्रकाशाम भविते अच्युतम् देवत्वाम् ब्रह्मा लोकाः। वेद का मन्त्र कहता है हे मानव तू प्रकाश कहाँ से प्राप्त करता है। तो प्रकाश के लिए हमारे यहाँ वेद मन्त्रों में बहुत से मन्त्रार्थ इस प्रकार के आए हैं जो प्रकाश के लिए मानव याचना करता रहा है यह प्रकाश कहाँ से प्राप्त होता है। यह वेद का मन्त्र अपने में उद्गीत गाता है क्या यह प्रकाश कहाँ से आता है। मेरे प्यारे! देखो कौन-सा प्रकाश जिस प्रकाश के लिए मानव के नेत्र अपने में प्रकाशमान होते हैं क्योंकि यह प्रकाश का कुञ्ज बने हुए हैं और प्रकाश ही प्रकाश को चाहते रहते हैं। और मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा प्रभु हम यह जानने के लिए आये हैं कि हमारे नेत्र किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं।

सूर्य प्रकाश का कुञ्ज है

उस समय गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने कहा हे जिज्ञासु! यह तो तुम जानते हो क्या यह जो सूर्य हमारा प्रकाश का द्युतक है यह प्रकाश को देने वाला है, यह प्रकाशम् ब्रह्मा यह प्रकाशमय कहलाता है।

रात्रि समाप्त हो जाती है प्रकाश आ जाता है यह इन्द्र बन करके आता है और इन्द्र हमारा देवता बन करके और देवता वही होता है जो अन्धकार को नष्ट करने वाला और प्रकाश को देने वाला हो, वही तो हमारा देवत्व कहा जाता है। तो इसलिए सूर्य हमारा इन्द्र है और देवता है और यह अन्धकार से मानव को प्रकाश में ला देता है। जो मानो रात्रि समय अन्धकार छाया रहता है तो प्रातःकाल होते ही मुनिवरों! सूर्य अपने प्रकाश में रत्त हो करके रात्रि को समाप्त कर देता है। अन्धकार को अपने गर्भ में धारण कर लेता है और यह प्रकाश में ही यह प्रकाश देना प्रारम्भ करता है। जैसे सूर्य उदय होता है मेरी प्यारी! माता अपने पुत्रों को जागरूक कर लेती है। हे पुत्र! जागरूक हो जाओ भानु उदय हो गया है, प्रकाश का दूत आ गया है। प्रकाश को देने वाला प्रकाशक बन करके हमारे समीप आ गया है। मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मचारियों को आचार्य कुल में आचार्य कहता है हे ब्रह्मचारी! आओ जागरूक हो जाओ, भानु उदय हो गया है, प्रकाश आ गया है।

मेरे प्यारे! देखो नाना प्रकार की वनस्पतियाँ इसी प्रकाश में अपने जीवन को प्राप्त करती रहती हैं, अपने में रसों का पान करती हुई मानो यह वनस्पतियाँ इन्द्रो भ्रम ब्रहे यह इन्द्र के गर्भ में निहित रहती हैं। तो विचार आता रहता है बेटा! यह सूर्य नाना प्रकार की वनस्पतियों को परिपक्व करने वाला है, नाना प्रकार के खाद्यान्न का यही निर्माणवेत्ता निर्माणक कहा गया है। जैसे हमारे वेद मन्त्रों में बेटा! विष्णु की विवेचना आती रहती है। तो विचार आता है कि यह अमृतम् यह विष्णु है और यह सूर्य प्रकाश का कुञ्ज और रक्षक है। यह रक्षा करता हुआ प्रकाश देता हुआ चला आता है। जैसे गौ नाम का पशु है और गौ नाम के रीढ़ के मानो पशु के रीढ़ के विभाग में एक सूर्यकेतु नाम की नाड़ी होती है जैसे सूर्य उदय होता है तो उस नाड़ी का ऊर्ध्वा मुख हो जाता है और ऊर्ध्वा मुख हो करके उन किरणों में से उन परमाणुओं को अपने

में से सिञ्चन करने लगता है, जिन परमाणुओं को जिनमें स्वर्ण की मात्रा होती है, इसलिए गौ नाम के पशु का जो देखो घृत में दुग्ध में पीत वर्ण है उसका केवल तारतम्य यही है कि उसमें स्वर्ण की मात्रा है। आयुर्वेदा आचार्यों ने इसका वर्णन करते हुए कहा है क्या यह जो गौ नाम का पशु है यह **पाही** कहा जाता है। यह वनस्पतियों में इसका बड़ा वर्णन माना गया है परन्तु आयुर्वेदा आचार्यों ने गौ नाम के पशु को स्वर्णकेतु वृत्ति का पशु कहा है। तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! वह सूर्य नाना प्रकार की किरणें दे करके नाना प्रकार का परमाणुवाद दे करके वह गौ नाम के पशु के रीढ़ के विभाग में उसका समन्वय हो जाता है और समन्वय हो करके ही मुनिवरों! अपने में ओजस्वता को प्राप्त हो जाता है। तो विचारवेत्ताओं ने इसके ऊपर अनुसन्धान किया।

चन्द्रमा प्रकाश का द्युतक है

देखो अमृतम् ब्रह्मा अस्वतम् देवत्वाऽम्। मेरे प्यारे! जैसे सूर्य की विवेचना कर रहे थे तो उन्होंने महर्षि प्रह्लान ने यह कहा प्रभु! जब माता की लोरियों का पान करते रहे तो माता हमें प्रायः इसका वर्णन करती रही है। परन्तु हम यह जानना चाहते हैं जब यह सूर्य नहीं होता तो प्रकाश का कुञ्ज कौन है? उन्होंने कहा जब सूर्य नहीं होता तो प्रकाश के देने वाला मानो यह चन्द्रमा है और यह चन्द्रमा हमें प्रकाश देता है। यह रात्रि को भी अपने गर्भ में धारण कर लेता है, अन्धकार को अपने में धारण करता हुआ मानो देखो यह अमृताम् दूतम् ब्रह्मा अमृते। यह नाना प्रकार के अमृत को बिखेरता रहता है। यही चन्द्रमा है जिसका समन्वय समुद्रों से रहता है समुद्रों से जल को अपने में धारण करता है और इसी की वृष्टि करा देता है मेघ मण्डलों के द्वारा। मानो देखो यही अपने में कुञ्ज बना हुआ है और यह प्रकाश का द्युतक कहा जाता है।

मेरे प्यारे! माता की रसना के निचले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है और जब जैसे ही देखो इसकी नाना प्रकार की किरणें

आती हैं, नाना कान्तियाँ आती हैं तो मेरे प्यारे! देखो यह उसका उस नाड़ी से उनका समन्वय हो जाता है। उस नाड़ी का समन्वय माता की पुरातत्त्व नाम की नाड़ी से होता है और पुरातत्त्व नाम की नाड़ी का सम्बन्ध माता की लोरियों से होता है और लोरियों से वही पञ्चम नाड़ी बन करके चलती है। माता की नाभि और माता के गर्भस्थल में जो हम जैसे शिशु होते हैं। मानो देखो बाल्य की नाभि और माता की नाभि का एक समन्वय होता है और समन्वय हो करके मुनिवरों! देखो वह अमृत को बिखेर रहा है नाड़ियों के द्वारा, अमृत किरणों के द्वारा। मेरे प्यारे! देखो यह माता के गर्भस्थल में हम जैसे शिशु पनपते रहते हैं। बेटा! देखो पणपम ब्रह्मा नमणस्तम, वह परमपिता परमात्मा निर्माण करता रहता है परन्तु मेरी भोली माँ अपने प्रभु से वञ्चित रहती है। वह कितना महान् है। जब माता के गर्भस्थल में रचना करता है तो बेटा! देखो बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दो सौ दो नाड़ियों का निर्माण कर देता है परन्तु मेरी भोली माँ उस निर्माणवेत्ता से वञ्चित रहती है। क्योंकि वह कितना निकटतम है और कितना दूरी है। क्योंकि अज्ञान से दूरी है और ज्ञान और विज्ञान से मानो ओत-प्रोत होने वाली जो मातृ शक्ति होती है वह उसको अपने निकटतम से दृष्टिपात करती है।

मेरे प्यारे! विचारवेत्ता कहते हैं क्या वह चन्द्रमा ही प्रकाशक है और चन्द्रमा का ही मुनिवरों! प्रकाश आता रहता है उस प्रकाश के कुञ्ज में मानव रत्त रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो उसका समन्वय समुद्रों से है और जलम् अमृतम् ब्रह्मे यह अमृत को बिखेरता रहता है।

तारा मण्डलों का प्रकाश

मेरे प्यारे! देखो उस समय ऋषि ने कहा, प्रह्लान ने कहा प्रभु! यह भी हमने जान लिया परन्तु जब यह चन्द्रमा नहीं होता तो प्रकाश का द्युतक कौन है? उन्होंने कहा जब यह चन्द्रमा नहीं होता तो जैसे जलातकारों ने कहा है क्या अमृतम् देखो जैसे माता अपने बाल्य को

शिक्षा देती रहती है इसी प्रकार एक शिक्षा है परन्तु देखो जब यह चन्द्रमा नहीं होता तो मुनिवरों! देखो हम नाना तारा मण्डलों के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। तारा मण्डलों का धीमा-धीमा प्रकाश आता रहता है और प्रकाश को मानव प्राप्त करता रहता है। मेरे प्यारे! वही प्रकाश देखो उसी में अन्धकार छाया हुआ है परन्तु धीमा-धीमा प्रकाश आता है तो अपनी पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है। उसी धीमे प्रकाश से अपनी पगडण्डी को प्राप्त करने लगता है। वह पथ दर्शक बन जाता है तो पथ प्रदर्शक बनने से मेरे प्यारे! देखो वह अमृत को प्राप्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो प्रकाश का कुञ्ज कौन है यह मानो नाना प्रकार के जो तारा मण्डल हैं जो अन्तरिक्ष में गमन कर रहे हैं वही तारामण्डलों का धीमा-धीमा प्रकाश आता है। एक से एक विचित्र मानो प्रभु का यह जगत है।

जब मैं विचारता रहता हूँ यह पृथ्वी वसुन्धरा के रूप में वर्णित होती रही है। तो मानो देखो यह नाना पृथ्वियाँ एक-दूसरे की परिक्रमा कर रही हैं। जैसे माता का पुत्र माता की परिक्रमा करता रहता है, माता पुत्र की परिक्रमा करती रहती हैं इसी प्रकार राजा और प्रजा का समन्वय रहता है। इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो नाना पृथ्वियाँ एक-दूसरे की परिक्रमा करती रहती हैं। मुझे स्मरण आता रहता है वेद मन्त्रों में क्या नाना ऋषि-मुनियों ने जब इस ब्रह्माण्ड की प्रतिभा को अपने में लाने का प्रयास किया और इसके ऊपर अन्वेषण करने लगे तो बेटा! देखो एक ब्रह्माण्ड हमारे समीप आ जाता है। एक विचित्र ब्रह्माण्ड है जिसके ऊपर हम कल्पना करते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो नाना हमारे आचार्यों ने, विचारवेत्ताओं ने बेटा! भारद्वाज की विज्ञानशाला में जब अन्वेषण होने लगा तो पृथ्वियों के ऊपर अन्वेषण हुआ तो बेटा! तीस लाख पृथ्वियों को जानने का उन्होंने प्रयास किया। तीस लाख पृथ्वियों को जाना। परन्तु देखो जब इकाई में जाने लगा वैज्ञानिक तो विचार

आता रहा बेटा! देखो यह विचारम् ब्रह्मे देखो तीस लाख पृथ्वियाँ यह सूर्य की परिक्रमा करने लगीं और यह जो सूर्य इतना विशाल मण्डल है जिसमें बेटा! तीस लाख पृथ्वियाँ समाहित हो जाती हैं। मेरे प्यारे! देखो जब सूर्य के ऊपर वैज्ञानिकों ने अन्वेषण किया तो मुनिवरों! देखो एक सहस्त्र सूयों की गणना की और एक सहस्त्र सूर्यो की गणना करके उसको बृहस्पति में समाहित कर दिया। बृहस्पति मण्डल इतना विशाल मण्डल है जिसमें मानो देखो तीस लाख पृथ्वियाँ सूर्य में और एक सहस्त्र सूर्य बृहस्पति में समाहित हो जाते हैं और एक सहस्त्र बृहस्पति मण्डल बेटा! देखो आरुणी मण्डल में समाहित हो जाते हैं और एक सहस्त्र आरुणी मण्डल मेरे प्यारे! देखो वह ध्रुव में समाहित हो जाते हैं। ध्रुव मण्डल इतना विशाल मण्डल है और एक सहस्त्र ध्रुव मण्डल पुष्प नक्षत्र में समाहित हो जाते हैं और एक सहस्त्र पुष्प नक्षत्र मेरे प्यारे! देखो स्वाति में ओत-प्रोत हो जाते हैं। एक सहस्त्र स्वाति नक्षत्र मूल कृतिका मण्डल में ओत-प्रोत हो जाते हैं। एक सहस्त्र मूल कृतिका मण्डल बेटा! अचङ्ग मण्डल में ओत-प्रोत हो जाते हैं। और एक सहस्त्र अचङ्ग मण्डल मारू आरङ्गत मण्डल में ओत-प्रोत हो जाते हैं। एक सहस्त्र अचङ्ग आरङ्गत मण्डल बेटा! देखो श्वेतकेतु मण्डल में ओत-प्रोत हो जाते हैं। एक सहस्त्र श्वेतकेतु मण्डल मेरे प्यारे! गन्धर्व में ओत-प्रोत हो जाते हैं। वेद का आचार्य कहता है यसम ब्रह्मा कृतम देवो सौर मण्डलाम् भूतम् ब्रह्मा वेद का आचार्य कहता है कि बेटा! देखो इतने मण्डलों का मुनिवरों! देखो एक सौर मण्डल बनता है और एक सौर मण्डल बेटा! देखो इसमें मानो देखो इतने मण्डल हैं और इतने लोक-लोकान्तर बेटा! उसमें कटिबद्ध रहते हैं।

विचारवेत्ताओं ने विचार-विनिमय करते हुए कहा है मेरे प्यारे! देखो इतने सौर मण्डल बने तो देखो एक अरब सत्तानवें करोड़ उन्नतीस लाख उन्नचसवीं हजार पाँच सौ इक्कसठ के लगभग बेटा! देखो इतने

सौर मण्डलों की एक आकाश गङ्गा बनती है और आकाश गङ्गाम् भूतम् ब्रह्म लोकाम्। मेरे प्यारे! देखो एक अरब छियानवें करोड़ उन्नत्तर लाख उनन्चसवें हजार पाँच सौ इक्यासी के लगभग बेटा! इतनी आकाश गङ्गाओं की एक अवन्तिका बन जाती है और मुनिवरों! देखो लगभग पौने दो अरब अवन्तिकाओं की एक निहारिका बन जाती है। और जब निहारिकाओं को उन्होंने जाना तो ऋषि अपने में मौन हो गया और यह विचारने लगा कि यह प्रभु का ब्रह्माण्ड तो अनन्तमयी माना गया है। मैं इस अनन्तमयी ब्रह्माण्ड के ऊपर विशेष में अन्वेषण नहीं कर सकूँगा। मेरे प्यारे! वह समाधिष्ठ हो करके अपने में शान्त हो जाता है। तो विचारवेत्ताओं ने कहा है बेटा! यह ब्रह्माण्ड बड़ा अनन्तमयी है तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि-मुनियों ने कहा क्या ब्रह्मरन्धे देवत्वाम् इनका धीमा-धीमा प्रकाश आता है परन्तु मानो देखो अन्धकार में उसी के प्रकाश से अपनी पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है।

अग्नि ही प्रकाश का दूत है

मेरे प्यारे देखो जब ऋषि मौन होने लगे तो उस समय मुनिवरों! देखो महर्षि प्रह्वाण ने पुनः यह प्रश्न किया। हे प्रभु! जब यह तारा मण्डल नहीं होता, यह सर्वत्र नहीं होता तो प्रभु यह नेत्रों में प्रकाश कहाँ से हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा जब मानो यह प्रकाश नहीं होता तो हम अग्नि के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। एक अमृतम् देखो अन्धकार छाया हुआ है मेरी प्यारी माता अपने गृह को अग्नि से प्रकाशमान करने वाली है। जो अग्नि काष्ठ में रमण कर रही है, जो अग्नि मानो देखो विद्युत धाराओं में रमण कर रही है उसी प्रकाश से मेरे प्यारे! देखो प्रकाशमान कर लेता है मानव और उसी के प्रकाश में अपने क्रियात्मक मानो देखो क्रिया में रत्त हो जाता है। विचारवेत्ताओं ने कहा कि यही अग्नि आयुर्वेदाचार्यो के गृह में जब प्रवेश करती है तो मेरे प्यारे! देखो यही अग्नि पचासी प्रकार की अग्नि मानी

जाती है। परन्तु यही अग्नि जब वैज्ञानिकों के कुल में पहुँची तो बेटा! देखो वैज्ञानिकों ने अरबों-खरबों प्रकार की अग्नि की तरङ्गों को जाना है। परन्तु यही अग्नि है जो शब्द को मेरे प्यारे! देखो व्यापक बना देती है अपनी धाराओं पर विद्यमान करती हुई। यही अग्नि है मानो जो द्यौ में प्रवेश हो जाती है जिससे द्यौ का निर्माण होता रहता है और द्यौ से ऊर्ध्वा भाग में कृतिका व्रतकेतु मण्डलों का निर्माण होता रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो यहाँ अग्नि की तरङ्गों का तरङ्गित है। यही अग्नि है बेटा! जो माता के गर्भस्थल में मानो विद्यमान हो करके शिशु को उष्ण बनाती रहती है। यही अग्नि है बेटा! जो अणु और परमाणुवाद में प्रवेश करती मेरे प्यारे! उसको ब्रह्माण्ड में समाहित कर देती है। आचार्यों ने यह कहा है जब बेटा! देखो एक-एक परमाणु का विभाजन किया जाता है तो एक-एक परमाणु में बेटा सर्वत्र ब्रह्माण्ड विद्यमान होता है। एक-एक परमाणु में ब्रह्माण्ड भर दिया उस देव ने तो बेटा! देखो उसकी महानता कितनी अनन्तमयी है। एक-एक परमाणु में बेटा! देखो ब्रह्माण्ड है और ब्रह्माण्ड में यह परमाणु अवृतों में निहित हो रहा है।

मेरे पुत्रों! देखो ऋषि ने कहा, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने हे ब्रह्मवेत्ताओं! हे ब्रह्मजिज्ञासुओं! मानो देखो प्रभु का यह अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है जिसकी मैं याचना कर रहा हूँ। तो हम देखो जब यह सर्वत्र नहीं होता तो अग्नि के प्रकाश से हम प्रकाशमान होते हैं। एक शब्द है वही अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके जैसे यजमान यज्ञशाला में विद्यमान हो करके अग्नि के ऊपर देखो अपने स्वाहा शब्द को ओत-प्रोत करा देता है और वही स्वाहा मानो देखो द्यौ में प्रवेश हो जाता है वह अग्नि की धाराओं पर शब्द विद्यमान हो करके वह बेटा! यज्ञ का रथ बन करके वह द्यौ में समाहित हो जाता है। विचारवेत्ताओं ने कहा है कि यह अपने में बड़ा अद्वितीय क्रियाकलाप है जिसको अनुसन्धानवेत्ताओं ने, जिज्ञासुओं ने बेटा! अपने में जिज्ञासा ले करके बेटा! इसके ऊपर

तप किया है। तो मेरे पुत्रों! देखो आचारम् ब्रव्हे कृतम अमृतम् अग्नि यह अग्नि ही प्रकाश का दूत है।

शब्द का प्रकाश

मेरे प्यारे! देखो महर्षि शाकल्य ने कहा हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं जब यह अग्नि नहीं होती तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? बेटा! आज मैं तुम्हें संक्षिप्त परिचय दे रहा हूँ। मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ, व्याख्यान देने के लिए नहीं आया हूँ। तुम्हें, मैं परिचय देना चाहता हूँ और वह परिचय केवल यह जब ऋषि ने ऐसा कहा तो महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने उत्तर देते हुए कहा क्या जब यह अग्नि नहीं होती तो शब्द के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। मानो देखो यह शब्द ही है जो मानव को कहीं का कहीं पहुँचा देता है। यह शब्द ही मेरे प्यारे! देखो मानो मानव का चित्र लिए हुए होता है और यही शब्द मेरे प्यारे! देखो प्रकाश का कुञ्ज बना हुआ है। यह प्रकाशम् ब्रह्मा शब्दम् ब्रहे यह शब्द का जो ब्रहे है यह अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत रहता है। मेरे प्यारे! देखो आचार्य जब अपने ब्रह्मचारियों को शब्दों से शब्दायमान करता है तो देखो ब्रह्मचारी उन्हीं शब्दों से अपने मानवीय जीवन के जो जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार हैं उन्हें भी जागरूक कर लेता है। मेरे प्यारे वही शब्द है जो साधना करने वाला जब शब्द के ऊपर मनस्तत्त्व और देखो प्राणतत्त्व को उसमें गमन करता है तो बेटा! वही शब्द मानव को मोक्ष की पगडण्डी का द्वारक बन जाता है। वही मानो देखो उसका पथ दर्शक बनता है और वही शब्द है मेरे प्यारे! देखो शब्दं ब्रह्मा एक मानव अन्धकार में जा रहा है और वह अन्धकार में जा करके मार्ग से कुमार्ग को जाता है वह कहता है अरे है कोई मार्ग चेताने वाला तो जो मानव मार्ग में स्थिर है वह कहता है आ जाओ मैं मार्ग में स्थिर हूँ। तो मेरे प्यारे! उस शब्द के प्रकाश से वह अन्धकार को त्याग करके उसी के प्रकाश से पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है, वह पथ दर्शक बन जाता है।

बेटा! एक पाण्डित्व है वह दर्शनों का अध्ययन करता है शब्दायमान हो करके अपने संस्कारों को मस्तिष्क में जागरूक करता हुआ वह बेटा! पाण्डित्व बन जाता है उन शब्दों के कारण। मेरे प्यारे! वही शब्द है जो राष्ट्र में अग्नि का काण्ड बन करके रहते हैं और वही शब्द है जो मेरे प्यारे! देखो अग्नि को शान्त कर देते हैं। तो विचारवेत्ताओं ने कहा कि यह शब्द ही मानव का जीवन है। बेटा! जब साधक अपने में गम्भीरता से मुनिवरों! देखो साधना करता है तो शब्दों के ऊपर विचार-विनिमय करता हुआ, अन्वेषण करता हुआ मेरे प्यारे! देखो वह ध्वनियों में ध्वनित हो जाता है। रात्रि का काल छाया हुआ है परमाणु एक-दूसरे से संघर्ष कर रहे हैं परन्तु उनकी जो धीमी-धीमी ध्वनि आ रही है शब्दायमान हो रहा है, ध्वनित हो रहा है। उसी ध्वनि को बेटा! देखो योगी अपने रात्रिकाल में बेटा! अपने में ग्रहण करने लगते हैं। उसी ध्वनि से अपने मानव के मस्तिष्क में जो अनहद ध्वनि हो रही है उस ध्वनि का मिलान करता हुआ वह जो स्वर सङ्गम हो रहा है बेटा! देखो ध्वनि को ध्वनित करता वह व्याकरण का महान् पाण्डित्य को धारण कर लेता है। वास्तव में पाण्डित्व वही होता है और वही देखो व्याकरण का पाण्डित्व कहलाता है जो अपने मन मस्तिष्क को एकाग्र करता हुआ और मन मस्तिष्क का जो मिलान होता है उसमें जो ध्वनि हो रही है, उसमें जो स्वर सङ्गम हो रहा है उसको जो अपने में ग्रहण करता है बेटा! वह व्याकरण का महान् पण्डिता कहलाता है। तो आज मैं बेटा! देखो उस सम्बन्ध में विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करना नहीं चाहता हूँ। वही शब्दायमान हो करके शब्द को ग्रहण करके मेरे प्यारे! देखो वह परमात्मा की कृति को अपने में धारण करने लगता है और वही मुनिवरों! प्रज्ञावी में प्रवेश हो करके और मेघा ऋतम्भरा में प्रवेश हो करके परमात्मा का दर्शन करने लगता है। तो आओ मेरे प्यारे! देखो मैं तुम्हें आध्यात्मिकवाद में इतना गम्भीर क्षेत्र में नहीं ले जा रहा हूँ। केवल विचार-विनिमय यह मुनिवरों! जब ऋषि इस प्रकार के शब्दों की व्याख्या करके अपने में मौन होने लगे।

आत्मा प्रकाश का कुञ्ज है

मुनिवरों! देखो उस समय ब्रह्मणे प्रह्वाण ने कहा प्रभु! हम जानना चाहते हैं जब यह शब्द नहीं होता तो किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा जब यह शब्द भी नहीं होता तो हे ब्रहणव व्रते, हे ऋषिवर! हे ब्रह्मवेत्ताओं तुम तो जानते हो मानो देखो जब यह शब्द नहीं होता तो हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। यह आत्मा इस शरीर में विद्यमान है और आत्मा ही मानो देखो प्रकाश का कुञ्ज है। जब तक इस शरीर में आत्मा विद्यमान है मानव अपनी क्रियाओं में रत्त हो रहा है और क्रियात्मकता में रमण करता हुआ मुनिवरों! देखो आत्मवेत्ता कहलाता है। आत्मा जब तक शरीर में विद्यमान है मानव चेतनित बना रहता है और जब यह आत्मा इस शरीर से निकल जाता है मानो देखो उस समय सर्वत्र होते हुए कुछ नहीं दृष्टिपात आ रहा है। मेरे पुत्रों! देखो ऋषि ने कहा क्या हे ऋषिवर! जब यह आत्मा इस शरीर से निकल जाते हैं देखो, नेत्रों के गोलकने ज्यों के त्यों बने हुए हैं परन्तु, सूर्य का प्रकाश आ रहा है। माता भी है और पुत्र का शव है परन्तु उसमें आत्मा नहीं है अरे क्यों नहीं प्रकाश को प्राप्त हो जाते? चन्द्रमा अपना धीमा-धीमा अपना प्रकाश दे रहा है, अमृत को बिखेर रहा है परन्तु देखो आत्मा नहीं है। हे मानव! तू अमृत को क्यों नहीं प्राप्त कर रहा है? मेरे पुत्रों! देखो धीमा-धीमा तारा मण्डलों का प्रकाश आ रहा है। अवन्तिकाओं का प्रकाश आ रहा है परन्तु प्रकाश को क्यों नहीं प्राप्त हो रहे क्योंकि तुम्हारे शरीर में चेतना नहीं है, आत्मतत्त्व नहीं है इसलिए आत्मा को जानने के लिए मानव प्रयास करता रहा है। मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा अग्नम् ब्रह्मा अग्नि अपना प्रकाश दे रही है और वह वैज्ञानिकों के कुल में भी है परन्तु आत्मा नहीं है। अरे! मानव क्यों नहीं प्रकाश को प्राप्त कर लेता। मेरे प्यारे! देखो प्रकाश का कुञ्ज तो आत्मा है। मुनिवरों! देखो ब्रह्मणं ब्रव्हा कृतम् देवाः वेद का वाक्य कहता है

अरे! मानव यह अन्तरिक्ष शब्दायमान हो रहा है। शब्द पर ध्वनि पर ध्वनि आ रही है। ध्वनि में मानो देखो यह कृतियों में रत्त हो रहा है। लोक-लोकान्तर अपने में सङ्घर्ष कर रहे हैं, ध्वनि पर ध्वनि आ रही है। अरे! मानव शरीर में आत्मा नहीं है ध्वनि से वंचित हो गया है, ध्वनि नहीं रही है। मेरे प्यारे! देखो ध्वनि का जो कुञ्ज है वह आत्माम् ब्रह्मे आत्मा व्रणे सुतम् तो वेद के ऋषि ने कहा हे पाण्डित्व तेरे में आत्मा नहीं है परन्तु तू शब्दायमान है, पाण्डित्व है। अरे! आत्मा नहीं रहा है तो पाण्डित्व कहा चला गया। मेरे पुत्रों! इससे विदित होता है कि आत्मा ही पाण्डित्व है, वही प्रकाश है। तो वेद के आचार्यों ने कहा हे मानव! तू अपने क्रियाकलापों में सदैव रत्त रहता है परन्तु इस आत्मा को जानने का भी तो प्रयास कर जो प्रकाश का कुञ्ज है, महानता में परणित करने वाला है। तो मेरे पुत्रों! देखो यह उच्चारण करके ऋषि अपने में मौन हो गये।

उन्होंने कहा, गाड़ीवान रेवक ने कहा क्या आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान दोनों एक-दूसरे के पूरक कहलाते हैं। मानव का जितना भी यह भौतिक विज्ञान है यह इन्द्रियों तक सीमित रहता है और जहाँ इन्द्रियों का विषय समाप्त हो जाता है वहाँ से आध्यात्मिकवाद का प्रारम्भ हो जाता है। तो मानव तुम आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान दोनों को सामान्यता में परणित करते रहोगे तो तुम्हारा आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान दोनों एक-दूसरे में पूरक हो करके एक-दूसरे में महानता को जन्म दे सकोगे। और यदि दोनों में एक-दूसरे में न्यूनता और विभिक्कता (विभिन्नता) है परन्तु देखो वहीं तुम्हारी महानता का ह्रास हो जाएगा। तो इसलिए आत्मा को जानने का प्रयास करो। मानव अपने सुखद के लिए, आन्नद के लिए ही प्रयास करता रहता है। नाना प्रकार का जो प्रयास है चाहे वह द्रव्य एकत्रित करने में लगा हुआ हो, चाहे वह राष्ट्रवेत्ता बनना चाहता हो, चाहे माता पुत्रवान् बनना चाहती हो

परन्तु सब आनन्द के लिए, परन्तु आनन्द कहा प्राप्त होता है—जब तक मानव अपने अन्तर्हृदय में पञ्च महाभूतों के लोक में रहने वाली आत्मा को नहीं जानोंगे जब तक तुम्हारा आनन्द प्राप्त नहीं होगा। **प्रकाश का कुञ्ज तो केवल आत्मा कहलाता है।** तो मेरे पुत्रों! देखो इस वाक्य पर आ करके ऋषि मुनि मौन हो गये।

उन्होंने मुनिवरों! देखो ऋषि के चरणों को स्पर्श किया। उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! आपने हमें अन्धकार से प्रकाश में पहुँचाया है, आपको धन्य है। धन्यमां भूतम् ऊर्ध्वाम् भूतम् ब्रह्मा आपके आत्माम् भूतम् तो आप को भूतम् ब्रहे आप तो देवत्व कहलाते हैं क्योंकि **ऋषि ही मार्ग दर्शक कहलाते हैं।** आपको धन्य है। तो इतना कह करके मौन हो गये।

मेरे प्यारे! देखो आज के **इन हमारे विचारों का अभिप्रायः** क्या हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं, आत्मा को जानने का प्रयास करो। यह है बेटा! आज का वाक्। जब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

ओ३म् देवाः आभ्याम् मनु गायनत्वा वायु रथाः
ओ३म् मधुमन्था मां वाचनम्मा देवाः।

दिनाँक : 19 अगस्त, 1992

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. जिस जीवन को परमात्मा का गान गाने का अवसर प्राप्त हो वह जीवन बड़ा अमूल्य है।
2. जो दूसरों को कष्ट न दें उनको आर्य कहते हैं।
3. वेद कहते हैं प्रकाश को जो उस प्रकाश में चलने वाला हो उसको आर्य कहते हैं।
4. संसार में अनादि तो तीन ही पदार्थ हैं आत्मा, परमात्मा और प्रकृति।
5. भगवान कृष्ण ने गीता का जो उपदेश दिया था वह अन्तरिक्ष में रमण कर रहा है।
6. यज्ञोपवीत आर्यों का भूषण है।
7. यज्ञोपवीत हमें परम प्रकाश का ज्ञान कराता है।
8. इसके तीन धागे हमारे द्वारा जो तीन ऋण—मातृ ऋण, पितृ ऋण और देव ऋण हैं।
9. मानव को तीनों ऋणों से उपराम होने का प्रयास करना चाहिए।
10. जो अपने परम पवित्र की रक्षा करता है वह परम पवित्र बन जाता है।
11. माता की आज्ञा का पालन करना, मातृ ऋण से उऋण होना है।
12. हमें देवताओं की पूजा करके देवताओं से ऋण से उऋण होना है।
13. आज सबसे पूर्व हमें अपने त्याग और तपस्या से अपने जीवन को ऊँचा बनाना है।
14. मनुष्य को जिस प्रकार का बनना है उसी प्रकार की पूजा करे।
15. दैत्य बनना है तो दैत्य के सम्पर्क में रहकर दैत्य की पूजा करो। और देवताओं की पूजा से तुम देवता बन सकते हो।

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

मास्टर ऋत्विक

श्रीमति ब्रजबाला धर्मपत्नि श्री राजकिशोर त्यागी निवासी ग्राम मकनपुर, जिला गाजियाबाद, उ.प्र. ने प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी अपनी प्रिय पौत्र ऋत्विक सुपुत्र श्रीमति अञ्जली एवम् श्री हरिओम त्यागी जी के जन्मदिवस की शुभ बेला के आगमन पर 1100 रु. का सात्विक सहयोग समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए प्रदान किया है जिसके लिए समिति हृदय से आभार प्रकट करती है।

श्री त्यागी जी व उनकी धर्मपत्नि प्रतिदिन प्रभात बेला में दैनिक अग्निहोत्र काफी लम्बे समय से करते चले आ रहे हैं और उसके पश्चात् पूज्यपाद गुरुदेव के प्रवचनों का स्वाध्याय भी निरन्तर करते हुए अपनी स्थिति को ऊर्ध्वागति प्रदान करने में संलग्न हैं। इसके साथ-साथ प्रत्येक रविवार को अपने गृह पर एक डॉ. साहब की निशुल्क सेवा में सभी आने वाले मरीजों को अपनी तरफ से फ्री दवाइयों का वितरण करते हुए अपनी प्रवृत्तियों को मानव कल्याण के लिए एक साकार रूप का दर्शन प्रस्तुत कर रहे हैं।

यह परिवार बड़ी उदारता से धार्मिक कार्यों में अपना सहयोग सभी क्षेत्रों में बनाए हुए हैं और विशेषकर पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के कार्यों में श्री गांधी धाम समिति लाक्षागृह, बरनावा, जिला-बागपत और वैदिक अनुसन्धान समिति, दिल्ली को निरन्तर तन, मन व धन से सहयोग करने में संलग्न हैं।

श्रदालु परिवार के सभी सदस्यों को पुनः से आभार प्रकट करते हुए समिति पौत्र के जन्मदिवस की बारम्बार शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए परिवार के सभी सदस्यों के लिए सुख, शान्ति, दीर्घायु एवम् सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

शुभ विवाह की शुभकामनाएँ

प्रिय विशाल एवम् प्रिया

प्रिय निशान्त एवम् चंचल

श्री अतीत सिंह त्यागी निवासी ग्राम रजपुरा जिला मेरठ ने अपने प्रिय जनों के शुभ विवाह संस्कार के उपलक्ष्य में 1100 रुपये का सात्विक सहयोग समिति को प्रकाशन के कार्य के लिए प्रदान किया है जिसके लिए समिति हृदय से आभार प्रगट करती है।

श्री त्यागी जी का परिवार पूज्यपाद गुरुदेव के साहित्य का अध्ययन करते हुए समय-समय पर यज्ञों का आयोजन कराता रहता है। नव-विवाहित दम्पत्तियों को समिति शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए समस्त परिवार की सुख, शान्ति, दीर्घायु एवम् सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

राष्ट्र कल्याणार्थ षष्ठम् चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

दिनांक 22 दिसम्बर 2019 रविवार से 29 दिसम्बर 2019 रविवार तक
ग्राम खरखौदा, मेरठ यज्ञस्थली मौहल्ला तिहाई (मुण्डा महादेव मन्दिर के पास)

—: निमन्त्रण पत्र :—

प्रिय आत्मीय स्वजनों,

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् आदि गुरु पूज्य ब्रह्मा जी महाराज के परमप्रिय ज्येष्ठ शिष्य पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (त्रेताकालीन शृङ्गी ऋषि महाराज जी) की पावमानी प्रेरणा एवम् आशीर्वाद से ''याग प्रचार समिति'' ग्राम खरखौदा के तत्वावधान में **राष्ट्र कल्याणार्थ षष्ठम् चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ** वैदिक परम्परा के अनुसार आदि ऋषियों द्वारा निर्धारित कर्मकाण्ड पद्धति द्वारा सम्पन्न होगा। जिसको इस कलयुग में पुनः से पूज्यपाद गुरुदेव ने जागृत किया और अपनी ये दिव्य ज्योति अपने शिष्यों को इस विश्व में प्रकाशमान बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। उसी मर्यादा को सम्पन्न एवम् उर्ध्वागति प्रदान करते हुए प्राणी मात्र के जीवन की जीवन सत्ता को सम्पन्न बनाने के लिए इस महायज्ञ का आयोजन मौहल्ला तिहाई ग्राम खरखौदा में आप सबके सहयोग से अत्यन्त श्रद्धा व हर्षोल्लास से पाँच वेदियों पर सम्पन्न होगा। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि इस महायज्ञ में प्रातः व साँय समयानुसार अपने परिवार सम्बन्धी व ईष्ट मित्रों सहित उपस्थित होकर तन, मन, धन से आहुति प्रदान करते हुए अपनी जीवन के मार्ग को प्रशस्त करें।

यज्ञ के ब्रह्मा – आचार्य श्री गुरुवचन शास्त्री जी, लाक्षागृह, बरनावा।

आचार्य एवम् वेदपाठी – श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय लाक्षागृह, बरनावा एवम् ब्रह्मचारिणी द्रोणस्थली आर्षकन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून।

—: कार्यक्रम :—

दिनांक 22 दिसम्बर रविवार 2019 से 29 दिसम्बर रविवार 2019 तक

प्रातः 7:15 बजे ओ३म् ध्वजारोहण (प्रथम दिवस) एवम् ब्रह्मयज्ञ (संध्या)

प्रातः 8:00 बजे से **11:15 बजे** तक यज्ञ व प्रवचन

सायं: 2:15 बजे से **5:15 बजे** तक यज्ञ व प्रवचन

दिनांक 29 दिसम्बर 2019 प्रातः

प्रातः 8:00 बजे से **11:00 बजे** तक यज्ञ और महायज्ञ की पूर्णाहुति तत्पश्चात् प्रवचन एवं आशीर्वाद शान्ति पाठ व ब्रह्मभोज। **निवेदक समस्त खरखौदा निवासी**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

आओ आज हम उच्चारण करते चले जाएँ, कि वह देव की, जो अनुपम देन है वह जो अनुपम प्रकाश है, उसमें नाना प्रकार का ज्ञान और विज्ञान आता है और नाना प्रकार की प्रतिभा उसमें हमें विराजमान होती प्रतीत होती है। आज हम उस महान् देव, वेदवाणी में ही, प्रभु की आनन्दमयी जो देन है उसका अनुवाद करते हुए, वेद का ऋषि कहता है आचार्य कहता है हे महा प्रभु! अकृते! तू वास्तव में हमारा कल्याण करने वाला है, जीवन को उदबुद्ध करने वाला है। तेरी ही महती, अनुपम कृपा से यह हमारा जीवन उदबुद्ध हो रहा है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 48 : अंक : 566
नवम्बर 2019

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-11-2019
Published on 5th day of the same month